5. रचनानुवादः (वाक्यरचनाकौशलम्)

अभ्यासः

1. अधोलिखितवाक्यानां संस्कृतभाषया अनुवादं कुरुत-

प्रश्न 1. छात्रों को ध्यान से कार्य करना चाहिए।
उत्तरम्:
छात्रान् ध्यानेन कार्य कर्त्तव्यम्/कुर्मुः।

प्रश्न 2. वृक्ष पर पक्षी चहचहाते हैं।
उत्तरम्:
वृक्षे खगाः कूजन्ति।

प्रश्न 3. हम सब मिलकर गाएँगे।
उत्तरम्:
वयम् मिलित्वा गास्यामः।

प्रश्न 4. खिलाड़ी फुटबॉल से खेल रहे हैं।
उत्तरम्:
क्रीडकाः पादकन्दुकेन खेलन्ति क्रीडन्ति।

प्रश्न 5. अध्यापक ने कहा-"सदाचार का पालन करो।
उत्तरम्:
अध्यापक: अकथयत्-सदाचारं पालय।

प्रश्न 6. कृषक गाँव की ओर गए।
उत्तरम्:
कृषक: ग्रामम् प्रति अगच्छत्

प्रश्न 7. तुम दोनो खीर खाओ।
उत्तरम्:
युवाम् क्षीर अखादतम्।

प्रश्न 8. विद्यालय के दोनो ओर वृक्ष हैं।
उत्तरम्:
विद्यालय अभितः वृक्षाणि/वृक्षा:सन्ति।

प्रश्न 9. माता बालक को दूध देती हैं।
उत्तरम्:
अम्बा बालकाय दुग्धं दाच्छति।

प्रश्न 10. हमें स्वास्थ्य के नियमों का पालन करना चाहिए।
उत्तरम्:
वयम् स्वास्थ्यस्य नियमानि पालनीया।

प्रश्न 11. कल राघव कहाँ था?
उत्तरम्:
ह्यः राघवः कुत्र आसीत्?

प्रश्न 12. मेरे पिता भोजन पकाते हैं।
उत्तरम्:
मम जनकः भोजन पचति।

प्रश्न 13. मेरे पास आकर बैठो।
उत्तरम्:
मम समीपे आगत्य उपविश।

प्रश्न 14. उन सबको दीवाली उत्सव अच्छा लगता है।
उत्तरम्:
तान् दीपोत्सवः रोचन्ते।

प्रश्न 15. ईश्वर को नमस्कार।
उत्तरम्:
ईश्वराय नमः।

प्रश्न 16. घर के बाहर कौन है?
उत्तरम्:
गृहात् बहिः कः अस्ति?

प्रश्न 17. भवन के ऊपर कौए बैठे हैं।
उत्तरम्:
भवनस्य उपरि काकाः उपविशन्ति।

प्रश्न 18. मैंने ऐसा नहीं कहाँ।
उत्तरम्:
अहम् एतत् न अकथयम्।

प्रश्न 19. कक्षा में कितने छात्र हैं?
उत्तरम्:
कथायाम् कति छात्राः सन्ति?

प्रश्न 20. तुम बाज़ार से दही लाओ।
उत्तरम्:
त्वम् आपणात् दधिं आनय।

2. प्रत्ययाधारिता वाक्य-संरचना

गुरु सेवमानेन छात्रेण या विद्या अर्जिता सा पूर्णजीवने तस्य सहायिका भूतवती।
जीवने ज्ञानमेव सर्वथा प्राप्तव्यम् यतः ज्ञानं विना न कोऽपि पूजनीयः।
अत्र स्थूलाक्षरपदानि प्रत्यय-युक्तानि सन्ति।
वाक्येषु प्रत्यय-प्रयोगार्थम् एते बिन्दवः ध्यातव्याः।

* शतृ-प्रत्ययस्य प्रयोगः परस्मैपदिधातुभिः सह भवति। शानच् प्रत्ययस्य प्रयोगः आत्मनेपदिधातुभिः सह भवति। आभ्यां प्रत्ययाभ्यां निर्मितपदानां प्रयोगः विशेषणरूपेण भवति।
* क्त-क्तवतु-प्रत्ययोः प्रयोगः भूतकालार्थे क्रियते। क्त-प्रत्ययस्य प्रयोगः कर्मवाच्ये भाववाच्ये च भवति। क्तवतु-प्रत्ययस्य प्रयोगः कर्तृवाच्ये एव भवति।

* तव्यत्-अनीयर्-प्रत्ययोः प्रयोगः विधिलिङ्लकारस्य अर्थे भवति। एताभ्यां प्रत्ययाभ्यां निर्मितपदानां प्रयोगः क्रियारूपेण विशेषणरूपेण च भवति।
  • भवन्तः एतेषां प्रत्ययानां विशिष्ट-अध्ययनम् अग्रिमेषु अध्यायेषु करिष्यन्ति।

एतानि वाक्यानि पठत-

1.	मित्र की सहायता करनी चाहिए।	मित्रस्य सहायता कर्तव्या।	*A friend should be helped.*
2.	उसने क्या कहा?	सः किम् उक्तवान्?	*What did he say?*
3.	मैंने उसे धन दिया।	मया तस्मै धनं दत्तम्।	*I gave him money.*
4.	कार्य के करते हुए ही सब साध लेते हैं।	कार्यं कुर्वन् एव सर्वं साधयाम:।	*Everything is achieved by doing practice.*
5.	यह चलचित्र भूलने योग्य नहीं है।	इदं चलचित्रम् अविस्मरणीयम् न अस्ति।	*This movie is unforgettable.*
6.	बढ़ता हुआ चन्द्रमा पूर्णता को पाता है।	वर्धमान: चन्द्र: पूर्णतां याति।	*The rising moon attains completion.*

3. एतेषां वाक्यानां संस्कृतभाषया अनुवादं कुरुत-

प्रश्न 1. उसने पत्र लिखा।
उत्तरम्:
सः पत्रम् अलिखत्।

प्रश्न 2. खाते हुए नहीं बोलना चाहिए।
उत्तरम्:
खादन् न वदितव्यम्।

प्रश्न 3. उस कन्या ने पुस्तक पढ़ी।
उत्तरम्:
सा कन्या पुस्तक अपठत्।

प्रश्न 4. तुम्हें भी पुस्तक पढ़नी चाहिए।
उत्तरम्:
त्वम् अपि पुस्तकम् पठितव्यम्।

प्रश्न 5. वह फल लेकर घर आई।
उत्तरम्:
सा फलं नीत्वा गृहं आगच्छत्।

प्रश्न 6. तुमने ऐसा नहीं सोचा।
उत्तरम्:
त्वम् एतत् न अचिन्त्यः।

प्रश्न 7. पुस्तक पाता हुआ छात्र प्रसन्न होता है।
उत्तरम्:
पुस्तकं प्राप्य छात्रः प्रसन्नं भवति।

प्रश्न 8. जाते हुए बालक को देखो।
उत्तरम्:
गच्छन् बालकं पश्य।

प्रश्न 9. शिमला नगर देखने योग्य है।
उत्तरम्:
शिमला नगरः दर्शनीयः अस्ति।

प्रश्न 10. खाने योग्य भोजन ही खाना चाहिए।
उत्तरम्:
खादनीयः भोजनं एवं खादितव्यम्।


लट्-लकार:
लृङ्-लकार:
लिट्-लकार:
लुङ्-लकार:
लुट्-लकार:
दशलकारा:
लृट्-लकार:
आशीर्लिङ्-लकार:
विधिलिङ्-लकार:
लोट्-लकार:
लङ्-लकार: